

आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का एक अध्ययन

(धार जिले के संदर्भ में)

¹वर्षा तिवारी, शोधार्थी शिक्षा विभाग, ओरिएंटल विश्वविद्यालय, इंदौर

² डॉ. राजेश तिवारी, सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, ओरिएंटल विश्वविद्यालय, इंदौर

सारांश

डिजिटल युग में सोशल मीडिया ने शिक्षा व्यवस्था को गहराई से प्रभावित किया है। वर्तमान समय में विद्यार्थी न केवल अध्ययन सामग्री के लिए बल्कि सामाजिक संपर्क, मनोरंजन एवं आत्म-अभिव्यक्ति के लिए भी सोशल मीडिया का व्यापक उपयोग कर रहे हैं। विशेष रूप से आरक्षित वर्ग के विद्यार्थी, जो सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक चुनौतियों के बीच शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, सोशल मीडिया के प्रभावों के प्रति अधिक संवेदनशील पाए जाते हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य इंदौर जिले के आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का विश्लेषण करना है।

इस अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति को अपनाया गया। इंदौर जिले के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों से चयनित 300 आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों को नमूने के रूप में लिया गया। आँकड़े अध्ययन आदत प्रश्नावली एवं सोशल मीडिया उपयोग प्रश्नावली के माध्यम से संकलित किए गए तथा माध्य, मानक विचलन एवं सहसंबंध तकनीकों द्वारा विश्लेषित किए गए। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि नियंत्रित एवं उद्देश्यपूर्ण सोशल मीडिया उपयोग अध्ययन आदतों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है, जबकि अत्यधिक एवं अनियंत्रित उपयोग अध्ययन समय, एकाग्रता एवं आत्म-अनुशासन को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। अध्ययन शिक्षा नीति निर्माताओं, शिक्षकों एवं अभिभावकों के लिए उपयोगी सुझाव प्रस्तुत करता है।

सूचक शब्द

आरक्षित वर्ग, अध्ययन आदतें, सोशल मीडिया, डिजिटल शिक्षा, इंदौर जिला

1. प्रस्तावना

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने शिक्षा के स्वरूप को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे व्हाट्सएप, यूट्यूब, इंस्टाग्राम और फेसबुक विद्यार्थियों के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। इन प्लेटफॉर्मों के माध्यम से विद्यार्थी शैक्षिक वीडियो, नोट्स, प्रतियोगी परीक्षा सामग्री एवं मार्गदर्शन प्राप्त कर रहे हैं, किंतु साथ ही समय की बर्बादी, ध्यान-भंग एवं अध्ययन से विमुखता जैसी समस्याएँ भी सामने आ रही हैं।

आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के लिए सोशल मीडिया दोहरी भूमिका निभाता है। एक ओर यह शैक्षिक संसाधनों तक पहुँच को सरल बनाता है, वहीं दूसरी ओर आत्म-अनुशासन के अभाव में अध्ययन आदतों को कमजोर भी करता है। इंदौर जिला, जो मध्य प्रदेश का एक प्रमुख शैक्षिक केंद्र है, इस अध्ययन के लिए उपयुक्त क्षेत्र प्रदान करता है। अतः यह अध्ययन सामाजिक न्याय एवं शैक्षिक समानता के दृष्टिकोण से अत्यंत प्रासंगिक है।

2. संबंधित साहित्य की समीक्षा

पूर्ववर्ती अनुसंधानों से यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि सोशल मीडिया का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर व्यापक एवं बहुआयामी प्रभाव पड़ता है। मिश्रा (2018) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर किए गए अपने अध्ययन में यह पाया कि सोशल मीडिया का सीमित एवं शैक्षिक उद्देश्यों हेतु उपयोग अध्ययन सामग्री की उपलब्धता को बढ़ाता है, जबकि अत्यधिक उपयोग अध्ययन समय में कमी तथा एकाग्रता में बाधा उत्पन्न करता है। पाटिल (2019) ने किशोर विद्यार्थियों के डिजिटल व्यवहार पर केंद्रित अपने अध्ययन में निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि सोशल मीडिया पर अधिक समय व्यतीत करने वाले विद्यार्थियों में अध्ययन अनुशासन एवं ध्यान-धारण क्षमता कमजोर पाई गई। चौधरी (2020) द्वारा आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में यह तथ्य सामने आया कि सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों के कारण इन विद्यार्थियों में अध्ययन निरंतरता बनाए रखना कठिन होता है और सोशल मीडिया का अनियंत्रित उपयोग इस समस्या को और गहरा करता है, यद्यपि नियंत्रित उपयोग उन्हें शैक्षिक संसाधनों एवं मार्गदर्शन से जोड़ने में सहायक सिद्ध होता है। देशमुख (2021) ने उच्च विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में यह स्पष्ट किया कि अत्यधिक सोशल मीडिया उपयोग विद्यार्थियों की एकाग्रता, समय-प्रबंधन एवं अध्ययन आदतों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। इसी क्रम में तिवारी (2022) ने डिजिटल शिक्षा के संदर्भ में किए गए अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि यदि सोशल मीडिया एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग निश्चित समय-सीमा और उद्देश्य के साथ किया जाए, तो विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों, आत्म-अनुशासन एवं शैक्षिक संलग्नता में सकारात्मक सुधार संभव है। इन अध्ययनों की समग्र समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि सोशल मीडिया का प्रभाव न तो पूर्णतः सकारात्मक है और न ही पूर्णतः नकारात्मक, बल्कि इसका प्रभाव उपयोग की प्रकृति पर निर्भर करता है, विशेष रूप से आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के संदर्भ में इस संतुलन को समझना अत्यंत आवश्यक है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. इंदौर जिले के आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया उपयोग की प्रवृत्ति का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का स्तर ज्ञात करना।
3. सोशल मीडिया उपयोग और अध्ययन आदतों के बीच संबंध का विश्लेषण करना।
4. नियंत्रित एवं अत्यधिक सोशल मीडिया उपयोग के प्रभावों की तुलना करना।

4. शोध-परिकल्पनाएँ

1. सोशल मीडिया उपयोग और अध्ययन आदतों के बीच सार्थक संबंध पाया जाता है।

2. अत्यधिक सोशल मीडिया उपयोग अध्ययन आदतों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।
3. नियंत्रित सोशल मीडिया उपयोग अध्ययन आदतों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

5. शोध-विधि

5.1 शोध-अभिकल्प

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

5.2 अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन इंदौर जिला (मध्य प्रदेश) के चयनित शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में किया गया।

5.3 जनसंख्या एवं नमूना

अध्ययन की जनसंख्या आरक्षित वर्ग (अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग) के हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थी थे। नमूना आकार = 300 विद्यार्थी, जिनका चयन सरल यादृच्छिक नमूना विधि से किया गया।

5.4 शोध-उपकरण

1. अध्ययन आदत मापन प्रश्नावली
2. सोशल मीडिया उपयोग प्रश्नावली (स्वनिर्मित)

5.5 आँकड़ों का विश्लेषण

माध्य, मानक विचलन एवं सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया।

6. आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

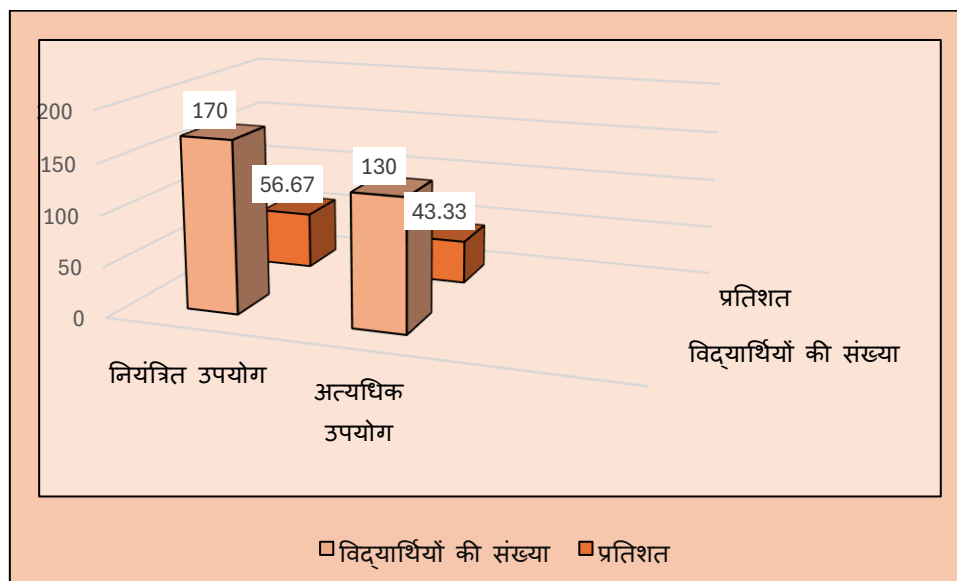
तालिका 1

सोशल मीडिया उपयोग का स्तर

सोशल मीडिया उपयोग का स्तर	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
नियंत्रित उपयोग	170	56.67
अत्यधिक उपयोग	130	43.33
कुल	300	100

व्याख्या:

तालिका 1 से स्पष्ट है कि 56.67% विद्यार्थी सोशल मीडिया का नियंत्रित उपयोग करते हैं, जबकि 43.33% विद्यार्थी अत्यधिक उपयोग की श्रेणी में आते हैं। यह दर्शाता है कि सोशल मीडिया का अनियंत्रित उपयोग एक महत्वपूर्ण समस्या के रूप में उभर रहा है।



ग्राफ 1 सोशल मीडिया उपयोग का स्तर

तालिका 2

सोशल मीडिया उपयोग और अध्ययन आदतों का सहसंबंध

नमूना आकार	सहसंबंध गुणांक (r)
300	0.59

व्याख्या:

सहसंबंध गुणांक 0.59 यह दर्शाता है कि सोशल मीडिया उपयोग और अध्ययन आदतों के बीच मध्यम स्तर का सकारात्मक सहसंबंध पाया गया है। यह संकेत देता है कि उपयोग की प्रकृति (नियंत्रित या अत्यधिक) अध्ययन आदतों को प्रभावित करती है।

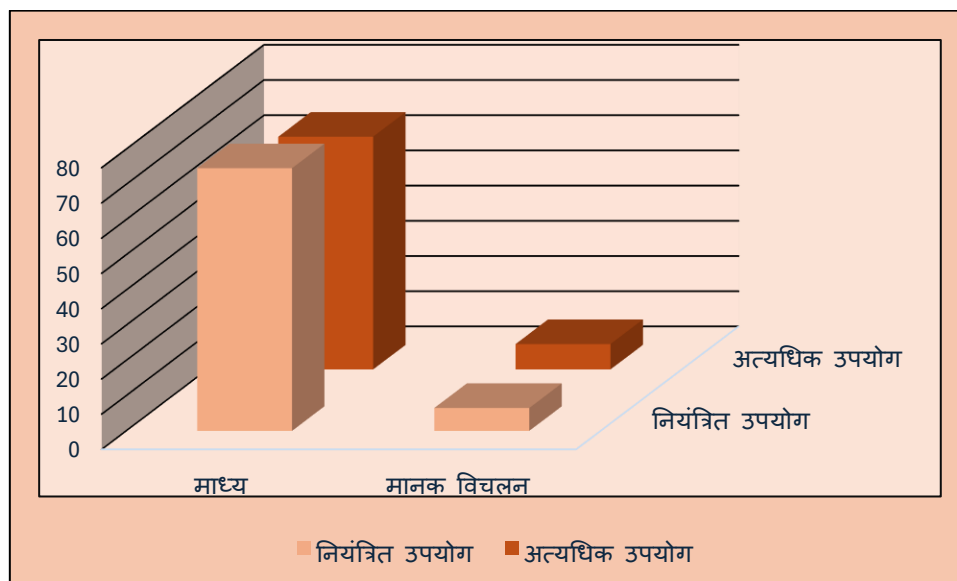
तालिका 3

नियंत्रित एवं अत्यधिक उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें

समूह	माध्य	मानक विचलन
नियंत्रित उपयोग	74.6	6.5
अत्यधिक उपयोग	66.1	7.2

व्याख्या:

तालिका 3 से यह स्पष्ट है कि नियंत्रित सोशल मीडिया उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें बेहतर पाई गईं। अत्यधिक उपयोग करने वाले विद्यार्थियों में अध्ययन समय की कमी एवं एकाग्रता में गिरावट देखी गई।



ग्राफ 2 नियंत्रित एवं अत्यधिक उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें

7. प्रमुख निष्कर्ष

1. सोशल मीडिया आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों को प्रभावित करता है।
2. नियंत्रित उपयोग अध्ययन आदतों को सुदृढ़ करता है।
3. अत्यधिक उपयोग अध्ययन में बाधा उत्पन्न करता है।
4. इंदौर जिले में सोशल मीडिया उपयोग की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है।

8. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि सोशल मीडिया का प्रभाव आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि इसका उपयोग संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण ढंग से किया जाए, तो यह अध्ययन में सहायक सिद्ध हो सकता है। इसके विपरीत, अनियंत्रित उपयोग अध्ययन गुणवत्ता को प्रभावित करता है। अतः डिजिटल शिक्षा के साथ आत्म-अनुशासन एवं मार्गदर्शन आवश्यक है।

9. सुझाव

1. विद्यालयों में सोशल मीडिया साक्षरता कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
2. अभिभावकों द्वारा विद्यार्थियों के डिजिटल व्यवहार की निगरानी की जाए।
3. शिक्षकों द्वारा सोशल मीडिया के शैक्षिक उपयोग को प्रोत्साहित किया जाए।
4. आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों हेतु विशेष डिजिटल मार्गदर्शन कार्यक्रम विकसित किए जाएँ।

10. संदर्भ

1. गोलमैन, डी. (1995). भावनात्मक बुद्धिमत्ता: क्यों यह आई.क्यू. से अधिक महत्वपूर्ण हो सकती है (पृ. 1-352). न्यूयॉर्क: बैटम बुक्स।
2. मिश्रा, के. (2018). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर सोशल मीडिया का प्रभाव. *भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका*, 12(2), 45-56।
3. पाटिल, आर. (2019). किशोरों के डिजिटल व्यवहार का शैक्षिक अध्ययन. *शैक्षिक मनोविज्ञान जर्नल*, 8(1), 33-41।
4. चौधरी, एस. (2020). आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक चुनौतियाँ एवं डिजिटल माध्यम. *सामाजिक विज्ञान समीक्षा*, 15(3), 67-78।
5. देशमुख, पी. (2021). सोशल मीडिया उपयोग और विद्यार्थियों की एकाग्रता. *भारतीय शैक्षिक अध्ययन*, 9(2), 21-30।
6. तिवारी, एन. (2022). डिजिटल शिक्षा और अध्ययन अनुशासन. *समकालीन शिक्षा जर्नल*, 14(1), 55-66।
7. कुमार, एस. (2020). किशोरों पर डिजिटल तकनीक का प्रभाव (पृ. 1-210). नई दिल्ली: एकेडमिक एक्सीलेन्स पब्लिशर्स।
8. सिंह, आर. (2019). अध्ययन आदतें और शैक्षिक उपलब्धि. *भारतीय शिक्षा वार्षिकी*, 11(1), 88-96।
9. यादव, एस. (2022). भारतीय दृष्टिकोण में आधुनिक शिक्षा (पृ. 1-230). जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स।
10. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी). (2020). विद्यालयों में मार्गदर्शन एवं परामर्श (पृ. 1-180). नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
11. संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को). (2019). डिजिटल शिक्षा और युवा (पृ. 1-134). पेरिस: यूनेस्को प्रकाशन।
12. बंडुरा, ए. (1997). आत्म-प्रभाविता: नियंत्रण का अभ्यास (पृ. 1-604). न्यूयॉर्क: डब्ल्यू. एच. फ्रीमैन एंड कंपनी।
13. आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन (ओईसीडी). (2018). छात्र कल्याण: अवधारणा और मापन (पृ. 1-260). पेरिस: ओईसीडी पब्लिशिंग।
14. वर्मा, के. (2018). सोशल मीडिया और शैक्षिक व्यवहार. *शिक्षा और समाज*, 7(2), 40-49।
15. यशपाल समिति. (1993). *बोझ रहित शिक्षा* (पृ. 1-78). नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।